

नौकरी की किताब

सत्र 30: नौकरी की पुस्तक का अनुप्रयोग

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 30 है, नौकरी की पुस्तक का अनुप्रयोग।

परिचय: अनुप्रयोग, कार्य बिंदु नहीं बल्कि सोच बिंदु [00:23-1:53]

तो अंततः, हम नौकरी की पुस्तक को लागू करने के बारे में कैसे सोचते हैं? हमने अपने जीवन के लिए अय्यूब की पुस्तक से क्या सीखा है? जब मैं आवेदन के बारे में सोचता हूँ, तो जरूरी नहीं कि मैं इसके बारे में कार्रवाई बिंदुओं के संदर्भ में सोचता हूँ जो मैं इस सप्ताह कर सकता हूँ। इसमें कुछ भी गलत नहीं है, और कभी-कभी हम उन चीज़ों की पहचान कर सकते हैं जो वास्तव में हमारे व्यवहार को बदल सकती हैं जब हमें किसी ऐसी चीज़ की ओर इशारा किया जाता है जिसे हम गलत तरीके से कर रहे हैं। वह ठीक है।

लेकिन मुझे लगता है कि अनुप्रयोग का एक और भी महत्वपूर्ण पहलू है; कार्य बिंदुओं के संदर्भ में सोचने के बजाय, मैं सोच बिंदुओं के बारे में बात करना पसंद करूंगा। हम अलग तरीके से कैसे सोच सकते हैं? अंत में, हम नहीं चाहते कि बाइबल हमें इस सप्ताह के लिए त्वरित समाधान दे। हम चाहते थे कि यह हमारे दिलों और जीवन में समा जाए ताकि हम वास्तव में अलग तरह से सोचना शुरू करें। जैसे ही हम अलग सोचेंगे, हम अलग तरह से कार्य करेंगे। चूंकि हम अलग तरह से सोचते हैं, इसलिए इस सप्ताह केवल एक कार्य बिंदु के लिए थोड़ी सी रणनीति बनाने के बजाय जो कुछ भी आएगा उसके लिए हम तैयार रहेंगे।

दुख के लिए तैयार रहना [1:53-4:20]

कष्ट सहने और ईश्वर के बारे में सोचने जैसी किसी बात पर जब जीवन गलत हो जाए तो हमें उसके लिए तैयार रहना होगा। एक मैराथन धावक एक सुबह उठकर उस दिन मैराथन दौड़ने का फैसला

नहीं करता है। एक कॉन्सर्ट पियानोवादक हजारों लोगों के सामने कॉन्सर्ट हॉल में नहीं जाता है और एक जटिल टुकड़े को देखने-पढ़ने का फैसला नहीं करता है। यह तैयारी ही है जो हमें सफल होने का मौका देती है। जीवन अलग नहीं है। हमें जीवन की आकस्मिकताओं, उन चीज़ों के लिए तैयार रहने की ज़रूरत है जो बिना किसी चेतावनी के हम पर आती हैं। यदि आप तब तक प्रतीक्षा करते हैं जब तक कि यह आपके ऊपर न आ जाए, तो आप वास्तव में इसके लिए तैयार नहीं होंगे। तैयारी करने में बहुत देर हो जाएगी।

जब मेरे बच्चे छोटे थे और ड्राइविंग शुरू करने के लिए तैयार हो रहे थे, तो मैंने फैसला किया कि अंधेरी सुनसान सड़क पर कहीं टायर फटने तक इंतजार करना अच्छा विचार नहीं है और उन्हें यह सीखने के लिए कोई मदद नहीं मिल रही है कि गाड़ी कैसे बदलें। सपाट टायर। इसलिए, हमने सड़क पर एक अच्छा, आरामदायक दिन चुना और सीखा कि टायर कैसे बदलना है।

समय से पहले तैयारी करें क्योंकि जब वास्तविक परिस्थिति आएगी, तो हो सकता है कि आप वास्तव में मूड में न हों। कभी-कभी मैं नौकरी की किताब के बारे में ऐसा ही सोचता हूँ। मुझे यकीन नहीं है कि यह पढ़ने के लिए एक अच्छी किताब है जब आपने वास्तव में पीड़ा शुरू कर दी है क्योंकि आपको इसके माध्यम से बहुत धैर्यपूर्वक काम करना पड़ता है, जो कि यह जो देना है उसे प्राप्त करने के लिए लगभग थका देने वाला होता है। जब दुख हम पर हावी हो जाता है, तो हमारा उस पर ध्यान ही नहीं जाता; हमारे पास ध्यान देने की क्षमता नहीं है।

इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम सबक सीखने का प्रयास करें, उन सोच बिंदुओं को अपने अंदर समाहित करें और समझ के भंडार को भरें, ताकि जीवन में ज़रूरत पड़ने पर हम इसका उपयोग कर सकें।

नौकरी हमें आराम पहुंचाने के लिए नहीं है [4:20-5:01]

तो चलिए इसके बारे में कुछ बात करते हैं। क्या किताब आराम देती है? निश्चित रूप से इसका इरादा यह नहीं है। यह आपको आराम देने की कोशिश नहीं कर रहा है। अय्यूब को दोस्तों या परिवार या यहोवा से आराम नहीं मिलता है। यह स्पष्टीकरण या उत्तर के माध्यम से आराम नहीं

देता है। और वास्तव में, जब पुनर्स्थापना होती है, तब भी इसका उद्देश्य आराम लाना नहीं होता है। नहीं, किताब से आराम नहीं मिलता। हमें इसे लागू करने के बारे में इस तरह नहीं सोचना चाहिए।

नौकरी स्वीकार्यता सिखाती है और सोचने के बिंदुओं को प्रोत्साहित करती है [5:01-7:46]

आराम का विकल्प यह है कि किताब हमें स्वीकार्यता सीखने में मदद करती है। हमारे दर्द या पीड़ा पर एक संशोधित दृष्टिकोण प्राप्त करने में स्वीकृति पाई जाती है। यह हमें अपने बारे में और अपनी स्थिति के बारे में अलग-अलग दृष्टि से सोचने और ईश्वर को नई रोशनी में देखने में मदद करता है। यह पुस्तक हमें जीवन में जो कुछ भी सामना करती है, उसे स्वीकार करने में मदद कर सकती है, चाहे वह कितना भी कठिन क्यों न हो।

मैं इसे किसी ऐसी चीज़ तक सीमित करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ जिसे वास्तव में हथियारों की लंबाई पर रखा जा सके। हम जानते हैं कि पीड़ा ऐसी नहीं है। अय्यूब की पुस्तक हमें ईश्वर के नियंत्रण की सीमाओं के बजाय ईश्वर के नियंत्रण की शर्तों को समझने में मदद करती है, ईश्वर के नियंत्रण की शर्तों और इससे हमें क्या उम्मीद करनी चाहिए या क्या उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उम्मीदें बहुत महत्वपूर्ण हैं। हमें स्पष्टीकरणों में आराम पाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। हम उस तरीके को स्वीकार करना चाहते हैं जिस तरह से भगवान ने दुनिया को काम करने के लिए बनाया है, यह स्वीकार करना चाहते हैं कि हम जो अनुभव करते हैं वह व्यर्थ नहीं है।

पुस्तक हमें आशा और विश्वास करने का कारण प्रदान करती है। इसलिए, हमारे पास यहां मार्चिंग आदेशों का एक सेट नहीं है, एक उपचारात्मक एप्लिकेशन है, जो हमें बताता है कि इस सप्ताह कैसे कार्य करना है। यह हमारी अपर्याप्तताओं या हमारी विफलताओं का सामना कर सकता है, लेकिन यह वित्तीय संकट में बिलों का भुगतान करने जैसा है। आप बस बिलों की बाढ़ से निपटने का प्रयास करें। लेकिन यह हमें सीखना, सोचना सिखा रहा है। इन चिंतन बिंदुओं को मैं रचनात्मक अनुप्रयोग कहता हूँ। इसमें जो सही है उसे करने से कहीं अधिक शामिल है। यह हमें यह सोचने की राह पर ले जाता है कि क्या सही है, अच्छी सोच की आदतें और दिनचर्या अपनाने की राह पर। इसमें शामिल है कि हम अपने बारे में कैसे सोचते हैं, हम अपने आसपास की दुनिया के बारे में कैसे सोचते हैं। और निःसंदेह, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम ईश्वर के बारे में कैसे

सोचते हैं। यह जीवन भर के लिए आंतरिक संसाधनों का आधार प्रदान करता है जो हमें उन परिस्थितियों का अच्छी तरह से जवाब देने में मदद करेगा जिनका हम सामना कर सकते हैं। वित्तीय संकट में बकाया बिलों का भुगतान करने के बजाय, यह एक बचत खाता खोलने और भविष्य के लिए बैंक में पैसा रखने जैसा है। हममें से कोई भी आमने-सामने रहना पसंद नहीं करता।

ईश्वर पिकायुन नहीं है [7:46-8:59]

तो, ईश्वर के बारे में कौन से विचार बिंदु हैं जिन्हें हम अपने जीवन और अपनी सोच पर लागू कर सकते हैं? भगवान पिकायुन नहीं है। अनुशासन के बावजूद, निःसंदेह, परमेश्वर उन लोगों को अनुशासित करता है जिनसे वह प्रेम करता है। परन्तु अनुग्रह स्मरण रखो; परमेश्वर अनुग्रह का परमेश्वर है।

मेरी हाल ही में एक ऐसे व्यक्ति से बातचीत हुई जो जीवन भर कट्टर ईसाई रहा। वे अब एक लाइलाज बीमारी के अंतिम दौर में थे। उन्होंने कुछ डर व्यक्त किया कि, किसी तरह, ईसा मसीह के सामने खड़े होने पर वे आलोचना के घेरे में आ जायेंगे कि उन्होंने पर्याप्त काम नहीं किया है। इस व्यक्ति ने अपना पूरा जीवन ईश्वर की निःस्वार्थ सेवा में बिताया था, और इस बात का थोड़ा आभास था कि ईश्वर पिकायुन है। कृपा याद रखें।

ईश्वर हमारे प्रति जवाबदेह नहीं है [8:59-9:18]

ईश्वर के बारे में सोचने का एक और बिंदु वह है जिसका उल्लेख हम पहले ही कुछ बार कर चुके हैं। भगवान हमारे प्रति जवाबदेह नहीं है। यह कभी न सोचें कि ईश्वर हमारे प्रति जवाबदेह है। हमें ईश्वर के प्रति ऐसे संदेह नहीं पालने चाहिए कि हम उस पर संदेह करने और उसके बारे में सबसे बुरा सोचने को तैयार हो जाएं।

ईश्वर कोई अराजक प्राणी नहीं है [9:18-9:53]

सोचने का एक अन्य बिंदु यह है कि ईश्वर मनमाना होने के बजाय सुसंगत है। वह बुरा होने के बजाय अच्छा है। अनियंत्रित शक्ति का दुरुपयोग करने के बजाय अनुग्रह का प्रदर्शन करना उनकी

विशेषता है। ईश्वर कोई अराजक प्राणी नहीं है जो शक्तिशाली, शरारती, मनमाना, अनैतिक, प्रवृत्ति और स्वार्थ से प्रेरित हो। ईश्वर कोई अराजक प्राणी नहीं है।

भगवान की कीमत पर अपना बचाव नहीं करना चाहिए [9:53-10:13]

सोचने का एक और बिंदु, हमें ईश्वर की कीमत पर खुद को सही साबित नहीं करना चाहिए या खुद को सही नहीं ठहराना चाहिए। हम पहले ही इन मुद्दों के बारे में बुक ऑफ जॉब में बात कर चुके हैं, और हमें उन्हें अपने जीवन और अपनी सोच में समाहित करना होगा।

ईश्वर के साथ छेड़छाड़ करना एक बुरा विचार है [10:13-10:51]

ईश्वर के साथ छेड़छाड़ करना हमेशा एक बुरा विचार है - हमेशा एक बुरा विचार। हम परमेश्वर को बदलने का प्रयास करने का साहस नहीं करते। उसे हमें बदलने की जरूरत है। कोई भी तस्वीर जो हम सोचते हैं कि हम ईश्वर के साथ उसे अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए मजबूर करने के लिए बना सकते हैं, अंत में उसे कमजोर कर देगी। आप वह परिणाम नहीं चाहते। हम ऐसा ईश्वर नहीं चाहते जो हमारे कहने और बुलाने पर निर्भर हो। ऐसा भगवान कोई भगवान नहीं है। हमें कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि हम परमेश्वर पर उसके वादों को फेंककर उसे एक कोने में धकेल सकते हैं; संभवतः, जिनका हम उपयोग कर रहे हैं वे वैसे भी वादे नहीं हैं। या, जैसा कि अय्यूब ने किया था, अपनी बेगुनाही की प्रतिज्ञा के साथ, भगवान को हेरफेर करने की कोशिश कर रहा था। हम उसका समर्थन एक कोने में नहीं कर सकते। हम नहीं चाहते। हम नहीं चाहिए।

हम भगवान से मांग नहीं कर सकते [10:51-12:44]

हमें कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि हम यह मांग कर सकते हैं कि ईश्वर हमारे चुने हुए समय पर हमारे निर्दिष्ट तंत्रों द्वारा हमें उत्तर दे। हम मांग करने की स्थिति में नहीं हैं। हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि चूँकि हम अपने आप को वफ़ादार मानते हैं इसलिए ईश्वर हमसे इस प्रकार की प्रतिक्रिया चाहता है जो हम चाहते हैं। भगवान का हम पर कुछ भी बकाया नहीं है। हमने कुछ भी नहीं कमाया है। हम उन परिणामों के लिए प्रार्थना करने में स्वतंत्र महसूस कर सकते हैं जो हम चाहते हैं, उपचार, मार्गदर्शन, जो भी हो, लेकिन इस प्रक्रिया में, भगवान को भगवान बनने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए। इसका कोई दूसरा तरीका नहीं हो सकता। कभी-कभी हमें उन समस्याओं से ठीक होने के बजाय

शारीरिक समस्याओं के साथ जीने के लिए उसकी ताकत की आवश्यकता होती है। हमें इसे स्वीकार करना होगा। कभी-कभी हमें अपनी परिस्थितियों को बदलने के लिए प्रेरित करने के बजाय उस स्थिति में बने रहने के लिए उसके प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है जो हमें अस्थिर लगती है। आखिरकार, प्रभु की प्रार्थना याद रखें, "तुम्हारा राज्य आये" - मेरा नहीं। "तुम्हारी इच्छा पूरी होगी" - मेरी नहीं।

निष्काम धार्मिकता [12:44-14:55]

भगवान जिन प्रार्थनाओं का उत्तर देने में सबसे अधिक प्रसन्न होते हैं, वे वे हैं जो उनसे हमें ऐसे लोगों के रूप में आकार देने के लिए कहती हैं जो जहां भी वे हमें रखें, उनकी सेवा और सम्मान कर सकें। तो, आइये निष्काम धार्मिकता के इस मुद्दे पर आते हैं। अय्यूब दर्शाता है कि ऐसी कोई चीज़ है। और इसलिए, क्या हमारी धार्मिकता और विश्वासयोग्यता उदासीन है? यदि आज हम अपने जीवन में परमेश्वर के आशीर्वाद के सभी प्रमाण खो देते, जैसा कि अय्यूब ने किया था, यदि हमारे पास भविष्य के आशीर्वाद, स्वर्ग, या अनन्त जीवन की कोई आशा नहीं थी, यही वह स्थिति है जिस पर इब्राहीम को विचार करना पड़ा, तो क्या हम तब भी वफादार बने रहेंगे भगवान के लिए और अपने जीवन से उसकी सेवा करें? क्या हम उसकी सेवा इसलिए करते हैं क्योंकि वह योग्य है या इसलिए कि वह उदार है? यह एक सरल प्रश्न है। यदि कोई लाभ न हो तो क्या हम उसकी सेवा करेंगे? हम ऐसी यात्रा पर नहीं हैं जिसके अंत में पुरस्कार मिले। हम एक ऐसे रिश्ते में हैं जिसमें जिम्मेदारियां हैं। मसीह के माध्यम से परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता सिर्फ हमारे पापों से बचाए जाने के बारे में नहीं है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह एक बुलाहट और एक रिश्ते के लिए बचाए जाने के बारे में है, भगवान के साथ एक रिश्ता जहां हम राज्य के काम में भागीदार हैं। मसीह के माध्यम से ईश्वर के साथ हमारा रिश्ता हमें वह नया दर्जा, वह नई पहचान, ईश्वर के राज्य में भागीदार, उसकी योजनाओं और उद्देश्यों की दिशा में काम करता है। रिश्ता स्वर्ग तक रुका नहीं है। मसीह में होना स्वर्ग से बंधे होने से अधिक महत्वपूर्ण है।

1 पतरस 3:15 पीड़ा के संदर्भ में आशा का उत्तर [14:55-16:55]

1 पतरस, 3:15 "अपने हृदयों में मसीह को प्रभु मानकर आदर करो। जो कोई तुमसे तुम्हारी आशा का कारण पूछे, उसे उत्तर देने के लिए सदैव तैयार रहो।" मुझे यह अविश्वसनीय लगता है कि हम अक्सर उस श्लोक का उपयोग ऐसे करते हैं जैसे कि यह क्षमा मांगने का आह्वान हो। और इसलिए, आशा के लिए एक कारण देना हमारे सभी विश्वासों के लिए एक कारण और व्याख्या देना है। यह वह नहीं है जो श्लोक कहता है, और यह वह नहीं है जो संदर्भ इंगित करता है। यह पीड़ा के बारे में एक अंश है। और जब यह कहता है, "हर उस व्यक्ति को उत्तर देने के लिए तैयार रहें जो आपसे आपकी आशा का कारण पूछता है," तो यह उस स्थिति का संदर्भ दे रहा है जहां आप स्पष्ट रूप से पीड़ित हैं, और आपके आस-पास हर कोई इसे जानता है और इसे देखता है। जब वे आपको आशा के साथ प्रतिक्रिया करते हुए देखते हैं, तो वे अब भी यही चाहते हैं। वे पूछने वाले हैं कि जब आपका जीवन इतनी जर्जर अवस्था में हो तो आप आशा से कैसे भरे रह सकते हैं? और पतरस कहता है, उत्तर तैयार रखो। यह हमारे बारे में यह समझाने के बारे में है कि हम ईश्वर के बारे में, दुनिया के बारे में, पीड़ा के बारे में कैसे सोचते हैं। उत्तर देने के लिए तैयार रहें।

ईश्वर की बुद्धि और हमारे भरोसे की प्रतिक्रिया [16:55-17:41]

यदि हम वास्तव में विश्वास करते हैं कि ईश्वर बुद्धिमान है और हम नहीं हैं, तो हम अपनी समझ की कमी के बावजूद नियंत्रण उसे सौंप सकते हैं। जब हम अतीत की ओर देखते हैं, तो हम कारणों की तलाश कर रहे होते हैं; हमें उद्देश्य की तलाश में भविष्य की ओर देखना चाहिए। हमें यह कल्पना करने की ज़रूरत नहीं है कि कोई स्पष्टीकरण है। हम भगवान, भगवान को बाहर नहीं कर सकते। ये वे बिंदु हैं जो हमने देखे हैं। हमें ऐसी धार्मिकता बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए जो हमें मिलने वाले लाभों पर आधारित न हो। भगवान की बुद्धि प्रबल है। विश्वास ही एकमात्र संभावित प्रतिक्रिया है।

द शोक: ईश्वर अच्छा है [17:41-20:25]

विलियम पॉल यंग के काफी विवादास्पद उपन्यास द शोक में इसे बहुत मार्मिक ढंग से सामने लाया गया है। लोगों को पुस्तक में बहुत सी चीजें विवादास्पद लगीं, और हो सकता है कि उनमें से कुछ उचित ही हों। लेकिन मैंने पाया कि पुस्तक में कुछ अविश्वसनीय अंतर्दृष्टियाँ थीं। मैं पुस्तक के अंत से

दो छोटे अंश पढ़ना चाहता हूँ, क्योंकि ईश्वर की आकृति उस पात्र से बात कर रही है जो पीड़ित है। हमने अय्यूब की पुस्तक से जो सीखा है उसके आलोक में इसे सुनें। "आप वास्तविकता की एक बहुत छोटी और अधूरी तस्वीर के आधार पर उस दुनिया को समझने की कोशिश करते हैं जिसमें आप रहते हैं। यह चोट, दर्द, आत्म-केंद्रितता और शक्ति की एक छोटी सी गांठ के माध्यम से एक परेड को देखने और यह विश्वास करने जैसा है कि आप हैं अपने आप में और महत्वहीन। इन सभी विचारों में शक्तिशाली झूठ शामिल हैं। आप दर्द और मृत्यु को अंतिम बुराइयों के रूप में देखते हैं, और ईश्वर अंतिम विश्वासघाती है या, शायद, सबसे अच्छा, मौलिक रूप से अविश्वसनीय है। आप शर्तों को निर्धारित करते हैं और मेरे कार्यों का न्याय करते हैं और मुझे ढूंढते हैं दोषी। आपके जीवन में वास्तविक अंतर्निहित दोष यह है कि आप नहीं सोचते कि मैं अच्छा हूँ। यदि आप जानते थे कि मैं अच्छा था और व्यक्तिगत जीवन की हर चीज का अर्थ, अंत और सभी प्रक्रियाएं मेरी अच्छाई से आच्छादित हैं, तो हालाँकि आप हमेशा यह नहीं समझ सकते कि मैं क्या कर रहा हूँ, आप मुझ पर भरोसा करेंगे, लेकिन आप ऐसा नहीं करते। आप विश्वास पैदा नहीं कर सकते, जैसे आप विनम्रता नहीं कर सकते। यह या तो है या नहीं है। विश्वास एक रिश्ते का फल है जो तुम जानते हो कि तुम से प्रेम किया जाता है। क्योंकि तुम नहीं जानते कि मैं तुम से प्रेम करता हूँ, तुम भरोसा नहीं कर सकते।"

ROM 11:33-35: उनकी बुद्धि की गहराई [20:25-23:05]

शक्तिशाली अंतर्दृष्टि. यह हममें से कई लोगों का वर्णन करता है। हम ईश्वर पर संदेह तब करने लगते हैं जब हमारा जीवन बर्बाद हो रहा होता है। मैं रोमियों अध्याय 11, श्लोक 33 से 35 के एक सुप्रसिद्ध अंश के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ। यह एक स्तुतिगान है जिसे हमने कई बार सुना है लेकिन इसके बारे में अय्यूब की पुस्तक के प्रकाश में सोचते हैं। और जैसे-जैसे मैं इसे पढ़ूंगा, मैं इसका विस्तार करता जाऊंगा। "हे भगवान की बुद्धि और ज्ञान के धन की गहराई।" ध्यान दें कि यह कैसे ज्ञान और परमेश्वर के ज्ञान के धन की गहराई को रेखांकित करता है। लेकिन फिर अगली पंक्ति देखें. "उसके निर्णय कितने अप्राप्य हैं।" निर्णय, यही उसका न्याय है। हम इसी बारे में बात कर रहे हैं। "उसके निर्णय कितने अप्राप्य हैं।" आप यह सब काम नहीं कर सकते, "और उसके

रास्ते पता लगाने से परे हैं।" फिर यह अगले तार्किक स्थान पर चला जाता है। अगला महान कदम है "जिसने प्रभु के मन को जान लिया है।" हम समझ नहीं पा रहे कि वह क्या कर रहा है। "या उसका सलाहकार कौन रहा है।" एक मिनट के लिए भी मत सोचो; आप उसे सलाह दे सकते हैं, उसे बेहतर तरीका बता सकते हैं, यह सब समझा सकते हैं। और फिर यह ठीक उसी मुद्दे पर आ जाता है, "जिसने कभी भगवान को कुछ दिया है, भगवान उसे उसका बदला चुकाए।" उसका हम पर कुछ भी बकाया नहीं है। हम किसी भी चीज़ के लायक नहीं हैं। और फिर यह स्तुति के एक चपरासी के साथ समाप्त होता है "क्योंकि उसी से और उसी के द्वारा और उसी को सब कुछ है। और उसी की महिमा सर्वदा होती रहे।" -- विश्वास।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह नौकरी की पुस्तक का सत्र 30 अनुप्रयोग है। [23:05]